Purva Mimaansa
A Multi-discipinary Bi-annual Research Journal
(Double Blind Peer Reviewed)

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

कामायनी की रचना प्रक्रिया

अरविन्द्र कौर

सांराश

कामायनी महाकाव्य हिन्दी साहित्य की सुप्रसिद्ध एवं सर्वोत्तम कृतियों में से एक है, जिसे प्रसाद जी ने सायास श्रृंगार किया है, चाहे वह संवेदना पक्ष है चाहे कला पक्ष। इन सबका विस्तृत अध्ययन नवीनता एवं आधुनिकता के संदर्भ में व्याख्यायित करना ही इस के महत्व को अंकित करता है ।

हिन्दी साहित्य जगत को अपनी महान कृतियों से श्रृंगारित कर जयशंकर प्रसाद जी ने साहित्य में अपना स्थान बनाया है । उनका समस्त साहित्य भाव स्वच्छन्दता की प्रवृत्ति को संजोय हुए है । प्रारम्भ में चाहे प्रसाद जी ने महावीर प्रसाद द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता एवं स्थूलता की प्रवृत्तियों का अपने काव्य में अनुसरण भले ही किया हो किन्तु उन प्रवृत्तियों को ज्यादा देर तक वे अपने काव्य का आधार न बना सके तथा हिन्दी साहित्य में स्वच्छन्द प्रवृत्ति के साथ पदार्पण किया । जिस आनन्द एवं सुख की उन्होंने स्वयं अनुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया उसी अनुभूति को उन्होंने अपने साहित्य का आधार बनाया और साहित्य की भिन्न–भिन्न विधाओं में अपने समस्त साहित्य के माध्यम से उसी बोध को व्याख्यायित करने का प्रयास किया । वह चाहे नाटक, उपन्यास, निबन्ध, गीति नाट्य, एकांकी अथवा काव्य हो, प्रसाद जी के सम्पूर्ण साहित्य की परिणति तभी पूर्ण सी होती प्रतीत होती है जब वह जीवन से जुड़ी हुई संवेदनाओं, पीड़ाओं को आत्मसात् करता चलता है एवं जीवन के चरम सत्य, जो कि आनन्द है उसकी प्राप्ति करने में सफल बन पाता है । यह माना जाता है कि रचनाकार स्वानुभूति को ही अपनी रचनाओं के माध्यम से व्याख्यायित करने को लालायित रहता है, अतः प्रसाद जी भी इस धारणा के बिल्कुल अनुकूल उतरते हैं क्योंकि प्रसाद जी ने जहाँ साहित्य में नवीनता का समावेश प्रस्तुत करने का प्रयास किया दूसरी ओर वहीं उन्होंने अपनी वेद, पुराणों, इतिहास से जुड़ी अपनी चेतना को अपने साहित्य का आधार बनाया है । प्रसाद जी ने हिन्दी साहित्य को अनेक कृतियाँ प्रदान की हैं जिनमें गीति नाट्य में उन्होंने 'करुणालय' की रचना की । नाटकों में अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी, स्कन्दगुप्त, चन्द्रगुप्त आदि नाटकों की रचना की । तत्पश्चात् उपन्यासकार के रूप में उनके तीन उपन्यास – तितली, कंकाल, इरावती हिन्दी साहित्य में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं । अन्तर्मुखी कलाकार होने के कारण प्रसाद जी की कहानियों में मानव मन के आन्तरिक भावनाओं का सूक्ष्म द्वन्द द्रष्टव्य होने के साथ–साथ भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के कुछ अंश दिखाई पड़ते हैं । इन प्रमुख कथा संग्रह जिनमें – ग्राम, पत्थर की पुकार, मधुवा, स्वर्ग के खण्डहर में, आकाशदीप, इन्द्रजाल, व्रत भंग, आँधी, ममता, दुखिया इत्यादि प्रमुख हैं । प्रसाद जी ने एकांकीकार के रूप में 'एक घूंट' नामक एकांकी की रचना प्रस्तुत की है । निबन्धों में 'चित्राधार', नाटकों में अजातशत्रु, जनमेय का नागयज्ञ, चन्द्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, राज्यश्री, विशाख आदि प्रमुख हैं । चूंकि शोध का विषय प्रसाद जी

*Ph.d research scholar,Department of Hindi Panjab University, Chandigarh

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

के काव्य से सम्बन्धित है तो प्रसाद जी की काव्य रचनाओं का विवरण प्रस्तुत करना अति अनिवार्य है । प्रसाद जी ने हिन्दी काव्य जगत् को अनेक अमर कृतियाँ प्रदान कीं । इन कृतियों में 'कानन कुसुम', प्रेम पथिक, महाराणा का महत्त्व, झरना, लहर, आँसू, करुणालय, आदि शामिल हैं । प्रसाद जी ने साहित्य को अनेक अमूल्य निधियाँ प्रदान की हैं किन्तु उनके जीवन का सबसे मूल्यवान काव्य जो हिन्दी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट रचना के रूप में स्वीकार किया गया है, वह काव्य है – 'कामायनी' । रचनाशीलता की दृष्टि से कामायनी प्रसाद जी के जीवन के अन्तिम पलों की सर्वश्रेष्ठ रचना है । ऐतिहासिक दृष्टिकोण से जितनी कामायनी सफल है आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में भी उतनी ही खरी उतरती है । उन्होंने जहाँ इसमें इतिहास व पुराणों की कथा को माध्यम बनाया वहाँ उन्होंने आधुनिक युग की समस्याओं जैसे पुरुष की प्रधानता, नारी का शोषण, सामाजिक कुरीतियों जैसे पशुबलि, बहुतविवाहवाद आदि के प्रति भी जागरूकता प्रस्तुत की है । उन्होंने जीवन के गूढ़तम रहस्य (आनन्द) को स्वयं अनुभूत किया एवं उसी अनुभूति को प्रकट करने के लिए काव्य को माध्यम बनाया । उन्होंने मन की असीम गहराई में उत्पन्न होने वाली मनोवृत्तियों को अपने काव्य में अभिव्यक्त किया । प्रसाद के अनुसार विषम परिस्थितियों में मानव मन डोलने लगता है और जो इन विषमताओं का डट कर सामना करते हुए जीवन को एकसमान रूप से जीने के लिए कार्यरत रहते हैं वहीं इन विषमताओं से उभर कर असीम आनन्द की प्राप्ति कर लेते हैं । विषम परिस्थितियों से मुक्त होने के लिए मनुष्य दूसरों का सहारा ढूंढता है और उसी विषमता के कारण ही इच्छा, ज्ञान और क्रिया में समन्वय स्थापित नहीं कर पाता । ऐसी स्थिति मनुष्य को स्वार्थ, विलास तथा वासनाओं को प्रज्वलित कर उसे कुमार्ग पर ले जाती है तथापि समाज ऐसे व्यक्ति को स्वीकार नहीं कर पाता व विरोध एवं संघर्ष की स्थिति बन जाती है जिससे छुटकारा पाना मनुष्य के लिए दुष्कर हो जाता है । ऐसी ही स्थिति का प्रस्तुतीकरण 'कामायनी' में किया गया है । मनु के वैयक्तिक जीवन में व्याप्त विषैले प्रभाव के कारण सारस्वत प्रदेश में वर्ग भेद उत्पन्न हो जाता है, संघर्ष होता है और वर्णों की ऐसी खाई बनती है जो मनु के अथाह प्रयत्नों से दोबारा भर न सकी । जीवन की इस विषमता का ज्ञान मनु को तब होता है जब होश आने पर श्रद्धा मनु को कैलाश पर्वत की चोटी पर ले जाकर तीन लोकों से उसका परिचय करवाती है । यह तीन लोक ज्ञान, इच्छा और क्रिया के प्रतीक हैं । तत्पश्चात् मनु मन की भावनाओं को छोड़ जीवन के वास्तविक सत्य को जान जाते हैं और ज्ञान की प्राप्ति कर अखण्ड आनन्द की अनुभूति प्राप्त करते हैं । फिर उन्हें कहीं भी भेद दिखाई नहीं पड़ता और सब एकाकार हो जाता है । उस समय मनु के अन्तर्मन में एक ठहराव की सी अवस्था बन जाती है और यही ठहराव सदैव आनन्द की स्थिति बनाये रखता है । आधुनिक युग में भी मनुष्य की यही स्थिति है –

''ज्ञान दूर कुछ, क्रिया भिन्न है,
इच्छा क्यों पूरी हो मन की ।
एक दूसरे से न मिल सके,
यह विडम्बना है जीवन की ।'' (कामायनी, रहस्य सर्ग, पृ.128)

कवि ने इसीलिए पारिवारिक समरसता लाने हेतु संकेत किया है कि पुरुष सदैव अपने अधिकार की बात करता है और नारी के अस्तित्व, उसकी प्रतिष्ठा को नज़र अंदाज कर देता है । अपने अधिकारों को उसके ऊपर थोपना चाहता है किन्तु नारी की भी अपनी कोई सत्ता है उसका

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

भी कुछ महत्त्व है। अहंकारी पुरुष की इस उलट बुद्धि के कारण ही पति पत्नी के सम्बन्धों में विरोधता पैदा होती है । इसी विरोधता को खत्म करके अधिकारी को सामंजस्य की भावना के साथ ही अपने अधिकार का उचित प्रयोग करना चाहिए । कामायनी में भी इस बात का उल्लेख मिलता है :–

''तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में,
कुछ सत्ता है नारी की ।
समरसता है सम्बन्ध बनी,
अधिकार और अधिकारी की ।'' (कामायनी, इड़ा सर्ग, पृ.67)

निस्सन्देह 'कामायनी' का कथानक ऐतिहासिकता को सामने रख कर लिखा गया है । चूँकि प्रसाद ही ने वेद, पुराणों, शास्त्रों, स्मृतियां आदि का गहन अध्ययन किया था, उसके फलस्वरूप उन्होंने कामायनी की कथा का आधार भी ऐतिहासिकता को ही बनाया जिसमें मनु को वे इतिहास का प्रथम पुरुष स्वीकार करते हैं । प्रसाद जी ने कामायनी महाकाव्य के आमुख में स्वयं कहा है कि जलप्लावन भारतीय इतिहास की एक ऐसी घटना है जिससे मनु को देवों से विलक्षण मानवों की एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करने का अवसर दिया ।

सामाजिक दृष्टिकोण से अगर देखा जाए तो प्रसाद जी ने भेद भाव, पशुबलि, जाति–पाति, नर संहार, नारी को भोग्या माना जाना, छूआ छूत और पाखंड को अपने काव्य के माध्यम से उजागर किया और समाज को इन कुरीतियों को छोड़ उच्च जीवन जीने की प्रेरणा दी जिससे समाज को स्वस्थ बनाने की प्रेरणा प्राप्त होती है । राजनैतिक दृष्टि से अगर देखा जाए तो प्रसाद जी के अन्दर देशभक्ति छुपी हुई है जो अपने देश के गौरव और मर्यादा को बनाए रखने और उसका पोषण करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहता है । काव्य में अपनी देशभक्ति का परिचय भिन्न–भिन्न रूपों में दिया है । कामायनी में सारस्वत प्रदेश के परिपेक्ष्य से राजनैतिक भावना का परिचय दिया है । आर्थिकता के परिप्रेक्ष्य से प्रसाद जी ने सांस्कृतिक सम्पन्न वातावरण में अपना जीवन आरम्भ किया किन्तु पिता व भाई की मृत्यु के पश्चात् जीवन आर्थिक पक्ष से कठिन व कमजोर होता चला गया । इन घटनाओं ने प्रसाद जी के किशोर मन को प्रभावित किया फिर भी वे घबराये नहीं अपितु अपने व्यक्तिगत जीवन में असहनीय कष्टों और विपत्तियों का सामना किया । इन विपत्तियों से मन में उपजी पीड़ा के प्रहारों से काव्यानुभूतियाँ जागृत हुईं । 'कामायनी' में जिस मार्मिकता से स्वर्ग के विगत वैभव का वर्णन मिलता है इसके पीछे प्रसाद जी के व्यक्तिगत जीवन की अनुभूति की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ती है । दार्शनिक प्रभाव के अन्तर्गत प्रसाद जी के व्यक्तिगत जीवन और काव्य पर तीन दर्शनों की छाप झलकती है । जिसमें उपनिषदों का दर्शन, काश्मीरी शैव दर्शन तथा बौद्ध दर्शन शामिल हैं । इन दर्शनों के साथ–साथ गीता के कर्म दर्शन का प्रभाव भी काव्य में यदाकदा दिखाई पड़ता है । प्रसाद जी के चिंतन एवं मनन ने भी उनके साहित्य को सबल आधार प्रदान किया है । 'कामायनी' में श्रद्धा के मुख से जीवन से उदासीन मनु के सम्मुख उन्होंने इसकी बड़ी मधुर एवं मार्मिक व्यंजना करवाई है –

''कर रही लीलामय आनन्द,
महाचिति सजग हुई सी व्यक्त ।
विश्व का उन्मीलन अभिराम,
इसी में सब होते अनुरक्त ।'' (कामायनी, श्रद्धा सर्ग, पृ.24)

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

साहित्यकार जीवन में जो कुछ भोगता है और जो कुछ अनुभव करता है उसकी सृजनात्मक आकांक्षा उसके व्यक्तित्त्व को साहित्य में प्रतिबिम्बत करती है । 'कामायनी' का अध्ययन करने पर पता चलता है कि 'कामायनी' में प्रसाद जी ने किसी जाति विशेष की कथा को प्रमुखता न देकर सांकेतिक रूप से सम्पूर्ण मानव जाति की कथा को अंकित किया है । प्रसाद जी ने महाकाव्य का आधार पुराणों व वेदों में अंकित नायक मनु जिसे आदि पुरुष के नाम से अभिहित किया गया है और उसकी पत्नी श्रद्धा जो कि उसका मार्गदर्शन कर जीवन का असल मार्ग बताकर जीवन को सार्थक बनाने में सहायक सिद्ध होती है, को बनाया है । 'कामायनी' का मूलाधार ज्ञान, इच्छा व कर्म तीनों का सामंजस्य है । श्रद्धा के माध्यम से प्रसाद जी ने समस्त मानवता के लिए स्निग्ध तथा पवित्र वाणी का प्रसार किया है । श्रद्धा 'कामायनी' में आदि जननी के रूप में प्रस्तुत की गई है । श्रद्धा के सम्पूर्ण जीवन में क्रियात्मकता और वैभव है । जिस तरह से आधुनिक युग का प्राणी अत्याधिक बुद्धिवादी बन गया है उससे सारी सभ्यता विनाश की ओर उन्मुख हो रही है । मानव का हृदय पक्ष विलीन होता जा रहा है और बुद्धि पक्ष प्रबल हो रहा है, इसी विकट स्थिति की ओर संकेत करते हुए 'कामायनी' में अंकित किया है –

प्रकृति शक्ति तुमने यन्त्रों से सब की छीनी,
शोषण कर जीवनी बना दी जर्जर झीनी । (कामायनी, संघर्ष सर्ग, पृ.94)

मनुष्य स्वयं को इस बुद्धिवाद से अलग नहीं कर पाता है, इसीलिए युद्ध होते हैं । मानव ही मानव का दुश्मन बन जाता है और इसी में अपना कल्याण समझने लगता है । 'कामायनी' में भी मनु बुद्धिवादी बन जाता है और इड़ा जिसे बुद्धि के प्रतीक रूप में स्वीकार किया गया है, उसके बन्धनों में जकड़ कर रह जाता है । मनु इड़ा से अपना सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है इसी कारण सारस्वत प्रदेश की जनता में विद्रोह की भावना उत्पन्न हो जाती है । बुद्धि के आकर्षण में फंस कर अपने पथ से विचलित होकर मनु बुद्धि से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता यही बुद्धि का आकर्षण उसके विनाश की ओर ले जाने वाला बन जाता है । श्रद्धा जिसे कामायनी में ज्ञान के प्रतीक रूप में अंकित किया गया है वह इसी विषम परिस्थिति में सामने आकर इस विनाश को रोक लेती है और मनु अपनी इच्छाओं की पूर्ति न होने की स्थिति में आत्मग्लानि व लज्जा से भर जाते हैं । इसी लज्जावश सब कुछ छोड़ कर कहीं दूर निकल जाते हैं । जब श्रद्धा होश में आती है तो मनु को ढूंढने लगती है, मनु को न पाकर वह अपने पुत्र मानव को इड़ा के पास छोड़कर मनु को ढूंढने निकल पड़ती है । मानव को इड़ा के पास छोड़ना प्रसाद जी के मानवतावादी दृष्टिकोण की पुष्टि करता है । मनु से जब श्रद्धा का मिलन होता है तब वह उसे जीवन के मूल मनोरथ से अवगत करवाती है जिसके ज्ञान से मनु के विचलित जीवन की नवीन दिशा प्राप्त होती है । वह उसे बताती है कि हृदय और बुद्धि का समन्वय ही जीवन प्रगति का मूल मन्त्र है । ज्ञान, इच्छा और कर्म के सामन्जस्य से ही आनन्द की प्राप्ति संभव होती है। इन तीनों में से एक की भी कमी से मनुष्य सदैव द्वन्द्वकी स्थिति में रहता है और यही द्वयता उसके जीवन के मनोरथ को पूर्ण बनाने में रूकावट बनती है । द्वन्द्वके कारण ही संघर्ष की स्थिति पैदा होती है । आधुनिकता के परिपेक्ष्य में भी यही स्थिति प्रत्यक्ष रूप में दिखाई पड़ती है । आज स्त्री और पुरुष में खींचतान और भागदौड़ मची हुई है, शासक और शासित के बीच में एक गहरी खाई बनी हुई है, पूँजीपती मज़दूरों का शोषण करने के लिए तत्पर रहते हैं । उनमें आपसी विरोध की भावना प्रबल है । ऐसी स्थिति में किसी मनोहर संसार की कल्पना भी करना अदूरदर्शिता लगता है । जब तक इस भेद बुद्धि का

Vol. 7 No. 1-2, March-Sep. 2016
ISSN : 0976-0237

नाश नहीं होगा, अहं की भावना समाप्त नहीं होगी, जब तक सुख व दुःख दोनों वृत्तियों में सामंजस्य स्थापित नहीं होगा, जब तक स्त्री पुरुष के मानसिक दृष्टिकोण में बदलाव नहीं आएगा, उनके सम्बन्धों में समरसता नहीं आएगी तब तक संसार एवं सम्पूर्ण जाति को प्रगति की ओर अग्रसर होना असम्भव व दुष्कर कार्य लगता है । प्रसाद जी की 'कामायनी' भी जीवन के इस गूढ़तम रहस्य की पहचान करवाने में सफल सिद्ध हुई है । ज्ञान, इच्छा व क्रिया का समन्वय ही प्राणी जगत की सम्पूर्ण अकांक्षाओं को पूर्ण कर असीम आनन्द की प्राप्ति का मूल स्रोत है । 'कामायनी' का अपना निजी सन्देश भी यही है जो श्रद्धा के द्वारा मनु के प्रति कहे शब्दों के माध्यम से यूँ प्रकट किया गया है :–

''और यह क्या तुम सुनते नहीं,
विधाता का मंगल वरदान
शक्तिशाली हो विजयी बनो,
विश्व में गूँज रहा जय गान ।
————————
विश्व की दुर्बलता बने, पराजय का बढ़ता व्यापार,
हँसता रहे उसे सविलास, शक्ति का क्रीड़मय संचार ।
शक्ति के विद्युतकण जो व्यक्त, विकल बिखरे हैं, जो निरुपाय ।
समन्वय उसका करे समस्त विजयिनी मानवता हो ।''

(कामायनी – आशा सर्ग, पृ.26)

सन्दर्भगत ग्रन्थ–सूची

1. अग्रवाल, धर्मप्रकाश : **प्रसाद काव्य में भाव व्यंजना** : मनोवैज्ञानिक विवेचन; मेरठ, अनुराधा प्रकाशक, 1978.
2. उपाध्याय, नीलमणि : **कामायनी का आनन्दवाद**; जयपुर, जयपुर पुस्तक सदन, 1977.
3. कौशिक, वीरेन्द्र : **जयशंकर प्रसाद और कामायनी**; मेरठ, शिक्षा साहित्य प्रकाशक
4. जोशी, भंवरलाल : **काश्मीर शैवदर्शन और कामायनी**; वाराणसी, चौखम्बा सस्कृत सीरीज़ ऑफिस, 1968.
5. दूबे, सत्यनारायण : **प्रसाद और कामायनी**; लखनऊ, नवयुग पुस्तक भंडार, 1966.
6. नागर, विमलशंकर : **प्रसाद की काव्य प्रतिभा**; मुरादाबाद, प्रेरणा प्रकाशन, 1982.
7. नागेन्द्र : **हिन्दी साहित्य का इतिहास**, नौऐडा, मयूर पेपरबैक्स, 1973.
8. पाण्डेय, शम्भूनाथ : **प्रसाद की साहित्य साधना**; आगरा, सरस्वती पुस्तक सदन , 1971.
9. माचवे, प्रभाकर : **हिन्दी के साहित्य निर्माता**, जयशंकर प्रसाद, दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्ज़, कश्मीरी गेट, 1990.
10. शर्मा, राजनाथ : **कामायनी** : अलीगढ़, भारत प्रकाशन मन्दिर, 1998.